खींचते २ यहां तक नीचे उतारा कि खटोलना पृथ्वी से केवल ३ फीट ऊँचा रह गया। फिर उन्होंने और भी दृढ़तापूर्वक रस्से को उस गिरे वृक्ष में बाँध दिया। अब फिलिप, कप्तान जोली, और चेको भी खटोलने से उतरे! सर बिल्फ्रेड अभी रस्सा लपेट कर सर भी न उठाने पाये थे कि तूफान आ गया, बिजली चमकने लगी और मेघ घहराने लगा।

सर बिल्फ्रेड—जल अवश्य बरसेगा! और यहां अग्नि जला लेनी चाहिये जिस्में जङ्गली जानवर हमलोगों के निकट न आवें।

यह कहकर उन्होने बन्दूकें बाहर निकाल लीं और थोड़ा घास फूस एकत्र करके गुब्बारे से कुछ दूर पर आग जलाई। जल अब रिमझिमं २ बरसने लगा परन्तु इस्से आग को जो घने वृक्षों के तले बल रही थी कोई हानि न पहुँची। फिलिप खटोलने में गया और सब के कम्बल निकाल लाया।

सर बिल्फ्रेड—अपने २ कम्बल ओढ़ लो और सोने की चेष्टा करो हमलोगों को यहां कुछ देर तक ठहरना होगा और सबके पहिले रखवाली करने की हमारी पारी है।

इनकी इस आज्ञा को केवल चेकोही ने माना और वह अशान्ती जो हर एक स्थान में आराम से सोने का अभ्यस्त था तुरन्त आग के सामने कम्बल बिछा कर लेट गया और थोड़ीही देर में खर्राटे लेने लगा परन्तु बाकी के लोग बैठेही रहे और बात चीत करते जाते थे।

हेक्टर—यह केवल आँधीही जान पड़ती है।

सर बिल्फ्रेड—ठीक है! यदि बिजली न चमके तो हम यहाँ से अभी चल खड़े हों और घण्टे में चालीस मील के हिसाबसे आगे बढ़ें फिर कलही तक शाडझील पर जा पहुंचेंगे यदि हमारी गेस इस्के वास्ते काफी हो, और मुझे तो आशा है कि वह बहुत होगी।

कप्तान—(जोर से) चुप !!! सुनो तो यह शब्द तूफानही का है या कुछ और। सब उसी समय चुप हो गये और अपने कान पृथ्वी पर लगाकर सुनने लगे, तो उन्हें जलवृष्टि के अतिरिक्त ऐसा सुन पड़ा मानों कोई रिसाला आता है।

सब हैरानी से एक दूसरे का मुंह ताकने लगे और खसक २ कर आग के निकट हो गये। परन्तु सर बिल्फ्रेड उछल कर अपनी बन्दूक लेने को जो एक वृक्ष के पास रक्खी थी, झपटे!

अभी वे वहां तक पहुँचे भी न होंगे कि एक बड़ा भारी अफ्रिकेन सांड़ एक ओर से अर्राता हुवा दिखाई पड़ा। वह अपनी पैनी सींगों से पृथ्वी को खोद रहा था और कुल शरीर उस्का झाग से लतपत था।

इस भयानक जन्तु के अचांचक आ जाने से सब भयभीत हो गये और उधर सर बिल्फ्रेड ने आवाज दी "दौड़ो और अपने को बन में छिपाओ" यह कह कर उन्होंने अपनी बन्दूक उठाई और निकटही के वृक्ष के पीछे छिप गये।

जैसेही वह भयानक जीव आग के पास पहुँचा वैसेही सिवा कप्तान जोली और चेको के सब भागकर इधर उधर छिप रहे ! वह अशान्ती गेंद की तरह सिकुड़ा हुआ पड़ा सो रहा था, और कप्तान साहब सोचते थे कि किधर जायें ! ऐसा जान पड़ता था कि उनकी बुद्धि ठिकाने नहीं थी, उनके साथियों के चिल्लाहट ने उन्हें और भी हैरान कर दिया था ।

वह सांड़ आँधी के समान चला आ रहा था । चेको के निकट से तो केवल एक बाल की दूरी से वह निकल गया परन्तु कप्तान साहब की ओर, वह बेतौर झुका और जैसेही उसने इन्हें उछालने के लिये अपना सिर नीचे किया वैसेही कप्तान जोली की बुद्धि ठिकाने हुई और उन्होंने एक बड़ी उत्तम चाल की, अर्थात् उस्के गरदन झुकातेही वे तुरन्त उस्की सींग पकड़ उछल कर उस्की गरदन पर चढ़ बैठे और उस्के गरदन के बाल अपने दोनों हाथों में दृढ़तापूर्वक पकड़ लिये ।

सातवां बयान ।

सर विल्फ्रेड यह देखतेही हेक्टर और फिलिप के सहित सांड़ के पीछे दौड़े, अब चेको भी उठा परन्तु उस्की समझ में कुछ भी न आता था । सांड़ कप्तान साहब को सवार किये हुये बन में छिप गया, केवल टापों का शब्द और पत्तों की खड़खड़ाहट, साथही चिल्लाने की आवाज़ तो सुन पड़ती थी । कप्तान साहब उस्की सींगो पर से गला फाड़ रहे थे ।

इनका कण्ठस्वर सुनतेही सर बिल्फ्रेड ने कहा धन्य ईश्वर कि अभी लों वह जीवित तो हैं ! हेक्टर ! जल्दी दौड़ो । बढ़ो ! बढ़ो ; हम उसे अब भी बचा सक्ते हैं, और तुम फिलिप चेको सहित गुब्बारे की रक्षा करो ।

हेक्टर झपट कर अपनी बन्दूक उठा लाया और सर बिल्फ्रेड के साथही साथ बन में शब्द की ओर झपटा । ये लोग कोई पाव मील तक बराबर दौड़ते गये, प्रायः ठहर २ कर शब्द भी सुनते जाते थे परन्तु अब कोई शब्द नहीं सुन पड़ता था । बन, चुप्पा नगर जान पड़ता था ।

सर बिल्फ्रेड एक वृक्ष के साथ लग कर खड़े हो गये उनके माथे पर पसीना आ गया और वे बड़े दुःखित स्वर में बोले ! हा ! बेचारा जोली खो गया अब मुझे कोई आशा नहीं । अब तक वह मुझ से कभी अलग नहीं हुआ था । वह बहुतही अच्छा मनुष्य था, उस्के निमित्त मैं अपनी कुल सम्पत्ति देने को प्रस्तुत हूं । "सुनिये !" हेक्टर ने ज़ोर से कहा ! इन शब्दों के साथही साथ बेलून की ओर से एक बड़ी चिल्लाहट सुनाई दी और उस्के उपरान्तही बन्दूक छूटने का शब्द सुनाई पड़ा । अब यह कौन सी नई आफत थी ?

सर बिल्फ्रेड—(चिल्लाकर) गुब्बारा अवश्य किसी कुचक्र में पड़ा ; चलो, लौट चलो, परन्तु खेद का विषय है कि मैं बेचारे जोली को न बचा सका उस्को अब उस्के भाग्य पर छोड़ता हूं ! आह । कैसी आपत्ति है ! हेक्टर ! ईश्वर जानता है कि मैं उस्के लिये कुछ नहीं कर सकता ।

अभी यह शब्द अन्त को भी न पहुँचे होंगे कि कुछ दूर से कराहने की आवाज़ आई ! हेक्टर और सर बिल्फ्रेड यह सुन्तेही उसी ओर दौड़ गये, तो वहां जाकर देखा कि कप्तान साहब अपनी जाँघों में सिर डाले, पत्तियों के एक ढेर पर बैठे आह ! आह ! कर रहे हैं । इनके चेहरे से घबड़ाहट के चिन्ह प्रगट थे ।

इस अचांचक हर्ष से आश्चर्य न था, कि सर बिल्फ्रेड की मृत्यु हो जाती ! उन्हों ने तुरन्त कप्तान के दोनों बगलों में हाथ देकर खड़ा कर दिया ।

सर बिल्फ्रेड—जोली, तुम्हें कहीं चोट तो नहीं लगी ?

कप्तान साहब ने अपने अङ्ग की ओर बड़े खेद से देखा और धीरे से बोले कि नहीं मुझे चोट नहीं लगी । परन्तु मेरी हड्डियांही गलें कि यह कैसी भयानक सवारी थी अबलों मैं कदापि जीवित न होता यदि वह साँड़ मुझे अपने उजड्डुपन से कहीं इधर उधर फेंक देता ।

इतने में गुब्बारे की ओर से दूसरी बन्दूक दगी ! और सर बिल्फ्रेड ने कप्तान जोली से पुछा कि तुम चल सक्ते हो ! कृपा कर जितना शीघ्र हो गुब्बारे की ओर आओ। हेक्टर ! तुम कप्तान साहब के साथ आओ मैं फिलिप की सहायता को जाता हूं ।

सर बिल्फ्रेड यह कह, और इन लोगों से बिना कुछ उत्तर पायेही बड़ी शीघ्रता से गुब्बारे की ओर दौड़े । ऊँची राह

इन्होंने बड़ी शीघ्रता से समाप्त की और वहां पहुँचने पर देखा कि चारों ओर अन्धकार छाया हुआ है और कुछ अङ्गारे इधर उधर छितराये हुये पड़े हैं इन्होंने यह देखकर धीरे से पुकारना प्रारम्भ किया ; "फिलिप" !!

फिलिप जो वहीं वृक्ष के नीचे छिपा हुआ था बोल उठा कि मैं यहां हूं ; सब कुशल है ! और चेको भी यहीं कहीं छिपा होगा । बृत्तान्त यों है कि जब आप लोग उधर गये तो बहुत से जङ्गली मनुष्य यहां पर आये और उन्हों ने अपना बर्छी मुझ पर चलाया । मैंने उनमें से एक को गोली मार दी और वह, वह देखिये घास पर पड़ा है । दूसरे जङ्गली को मैंने उस्के कुछ देर उपरान्त गोली मारी, परन्तु हमारी जान में वह बच गया, क्योंकि उस्के थोड़ीही देर उपरान्त मैंने पास की झाड़ी में चिल्लाहट सुनी थी । गुब्बारे को उनलोगों ने नहीं देखा, और हां हेक्टर कहां है ? कप्तान साहब का पता लगा या नहीं ?

सर बिल्फ्रेड—बस वे दोनों आतेही होंगे ।

यह कहकर वे उस मरे हुये जङ्गली पर झुके और भली भाँति देखकर कहने लगे कि यह फल्ब जाति में से है, इनके ऐसी भयानक, अफ्रिका में अन्य जातिही नहीं है । ऐसा प्रतीत होता है कि ये लोग इसी भैंसे के शिकार के निमित्त यहां तक पीछा करते हुये आ निकले थे । मुझे भय है कि कहीं उनके और साथी यहां तक न आ जायें । इन कम्बलों को शीघ्र

एकत्रित करो और चेको को बुला लो, जैसेही कप्तान जोली और हेक्टर यहां आयेंगे हमलोग यहां से कूच कर जायेंगे। यद्यपि अभी तूफान थँमा नहीं है परन्तु वह इन जङ्गलियों के आक्रमण से अच्छा है।

आँधी भी अब बड़े बेग से बह रही थी, फिलिप चेको को आवाज़ देता था परन्तु कोई जबाब नहीं मिलता था कि सहसा जङ्गलियों की भयानक चिंघाड़ कान में पहुँची ! शब्द से जान पड़ता था कि वे लोग कुछ बहुत दूर नहीं हैं।

सर बिल्फ्रेड ने चिल्ला कर कहा कि वे पाजी आ रहे हैं और वे बहुत शीघ्र यहां पहुँच जाँयगे, वह बोदा अशान्ती कहां है ? कप्तान और हेक्टर अभी तक क्यों नहीं आये ?

इनके कहने के साथही हेक्टर इनके सामने आ खड़ा हुआ और इस्के पीछे कप्तान साहब भी लँगड़ाते और काँखते कूँखते आ पहुँचे ! अब कुछ दूर पर सब को बड़ा प्रकाश दिखाई पड़ने लगा।

सर बिल्फ्रेड—(ज़ोर से) खटोलना और नीचे खींचो कम्बल इकट्ठे करके उस्में डालदो ! बन्दूकें भर रक्खो।

इनके यह कहतेही फिलिप खटोलना नीचे खींचने लगा। हेक्टर और सर बिल्फ्रेड ने कम्बल इकट्ठे करने प्रारम्भ किये, और बन्दूकें भर लीं। जब खटोलना पृथ्वी से छू गया, तो सर बिल्फ्रेड ने उस्में कम्बल फेंक दिये और फिर स्वयं कूदकर भीतर गये इस्के उपरान्त कप्तान जोली का हाथ पकड़ कर उस्में

चढ़ा लिया ! साथही इस्के फिलिप और हेक्टर भी उस्में सवार हुये, और सर बिल्फ्रेड ने एक कुल्हाड़ी उस रस्सी के काटने की इच्छा से जो उस वृक्ष में बँधी थी उठाई। जङ्गली अब केवल बीस गज़ की दूरी पर रह गये थे कि हेक्टर ने कहा रस्सी अभी मत काटिये ! चेको कहां है ?

सर बिल्फ्रेड ने होठोंही होठों में कुछ कहा और क्रोध से चिल्लाये कि मैं उस अभागे को केवल आधे मिनिट का और समय देता हूं ! हमलोगों के प्राण केवल उस्के लिये चक्र में न पड़ेंगे यह कहकर वह गिनने लगे, एक-दो-तीन-चार।"

इतनी देर में हेक्टर और फिलिप ऊँचे स्वर में चेको का नाम ले ले कर पुकारने लगे और जब सर बिल्फ्रेड २६ की गिनतीं तलक पहुँचे कि सहसा वह खोया हुआ अशान्ती एक ओर से कूदता हुआ आया और खटोलने से चमट गया साथही झल्लाये हुये कप्तान साहब ने एक चपत खींचकर ऊपर से सही की।

जङ्गली अब चारही कदम की दूरी पर रह गये, और उन्होंने अपनी बरछियां सीधी कीं परन्तु साथही खटोलने से एक बाढ़ बन्दूक की पड़ी कि जिस्से जङ्गलियों की सामने की श्रेणी लोटने लगी और वे भभक २ कर पीछे हट गये। साथही सर बिल्फ्रेड ने रस्से को काट दिया। परन्तु अब एक नई आफत और आई ! अर्थात् गुब्वारा केवल दसही फीट ऊँचा उठ कर रह गया। यह देखकर सबके हाथ पाँव फूल गये ! परन्तु

सर बिल्फ्रेड ने धैर्यता से कहा ! "बालू की थैलियां फेंको" और उन्हों ने स्वयं एक जङ्गली को जो कि खटोलने पर्यन्त पहुँच गया था और अपनी बरछी ऊपर फेंका चाहता था तमञ्चे से मार गिराया। इधर कप्तान जोली ने बालू का थैला नीचे गिरा दिया और गुब्बारा क्रमशः ऊपर उठने लगा, परन्तु इस्क उठते २ नीचे से तीर और बरछियों की बौछार आने लगी जो भाग्यवश बेलून पर्यन्त नहीं पहुँचती थी।

सर बिल्फ्रेड—(जल्दी से) दूसरा थैला भी !

साथही दूसरा थैला भी फेंक दिया गया और गुब्बारा अब बड़े बेग से ऊपर चढ़ गया। चारों ओर सिवा तूफान और अन्धकार के और वहां थाही क्या ? सब लोग खटोलने में चुप चाप पड़े हुये थे।

एक घण्टा व्यतीत हो गया, और अब तूफान कुछ कम होने लगा। पानी बन्द हो गया और बिजली तो अब चमकतीही न थी। डरे हुये पथिकों के चित्त में अब फिर आशा और उत्साह का अंकुर उत्पन्न हुआ। उठकर सब अपने २ स्थान पर बैठ गये लालटेन कठिनाई से बली और तब सर बिल्फ्रेड ने कम्पास पर दृष्टि की।

सर बिल्फ्रेड—(प्रसन्नता से) हमलोग भाग्यवश अब भी अपनी राह पर चले जा रहे हैं हमारी इच्छा अब भी पूरी हो सकी है।

कप्तान—(जो अपने चोटों के कारण बड़े क्रोध में थे) अच्छा माना, कि आप शाड झील पर्यन्त पहुँच गये; तब फिर !!!

सर विल्फ्रेड—संतोष करो और देखो !

फिर कप्तान साहब चुप हो गये, बीच में एक बेर बिजली चमकी जिस्से इनलोगों को मालूम हो गया कि हम पृथ्वी से बहुत ऊँचे नहीं हैं।

सर बिल्फ्रेड—कुछ और भी ऊपर चढ़ना चाहिये !

यह कहकर उन्होंने एक थैली बालू की और फेंकी जो अन्तिम थी ! गुब्बारा और ऊपर चढ़ा कि इतने में एक ऐसा झोंका बायु का लगा कि सब को पूरी आशा हो गई कि यह गुब्बारे को अवश्य किसी ओर फेंक देगा और सबके सब भय से चिपक कर बैठ गये।

आठवां बयान।

एक घराटा पर्यन्त सब चुप चाप पड़े रहे, चारों ओर भयानक अन्धकार छाया हुआ था और गुब्बारा वायु में लह-राता उस तेज हवा में आगे बढ़ता चला गया। कभी २ पानी का छींटा भी आ जाता था जिस्से बचने के लिये उनलोगों ने अपने ऊपर कम्बल डाल लिये थे।

सर बिल्फ्रेड एक कोने में चुपचाप बैठे हुये इस हुल्लड़ को सुन रहे थे इस्के बीच २ में कभी २ दियासलाई बाल कर अपने कम्पास को देखने लगते थे। अब पुनः उनके सा-थियों के चेहरे के आकार से हर्ष के चिन्ह प्रगट होने लगे।

अर्थात् सर बिल्फ्रेड ने एक ऐसा शब्द किया जिस्से उनके साथियों को जान पड़ा कि इन्होने कोई आश्चर्यजनक बात देख पाई ! उनके साथी भी उनके निकट आ गये और जिधर उन्होने उँगली उठाई उधरही देखने लगे। तो कुछ प्रकाश दिखाई पड़ने लगा। जिस्से यह जान पड़ता था कि यहां कोई बड़ा गाँव बसा है।

सर बिल्फ्रेड—यह एक बड़ा नगर है। मैं केवल एक नगरही को जानता हूं जो इधर है, परन्तु आश्चर्य तो इस्का है कि हम इतना शीघ्र यहां आ कैसे पहुँचे।

हेक्टर—क्यों महाशय यह कौन नगर है ?

सर बिल्फ्रेड—नगर डोरा, जो बोरा देश में है और यहां से शाड झील केवल २५० मील है। और यह सम्भव है कि यह राज्य बोर न भी हो जिस्की बस्ती ५ करोड़ है इसे एक शोवा जाति ने जो वास्तव में अरब हैं विजय किया है वेही यहां के अधिकारी भी हैं। इस देश में गुलामों की सौदागरी के अतिरिक्त अनाज, रूई, नील, हाथी, घोड़ों और बैल, की भी सौदागरी होती है।

अभी सर बिल्फ्रेड यह कहही रहे थे कि गुब्बारा नगर डोरा पर से (यदि वह यथार्थ में वही था तो) चला। और कुछही देर में वह आंखों की ओट हो गया।

सर बिल्फ्रेड—अब मैं आराम करूंगा ! यदि कोई नई घटना उपस्थित हो तो मुझे जगा देना।

यह कहकर वे एक कोने में सो गये ! बाकी और सब लोग उँघ रहे थे जो कोई आश्चर्य की बात न थी। हेक्टर ने उन लोगों को सोने और स्वयं जागते रहने के लिये कहा ! चेको और फिलिप ने तुरन्त इस्की सलाह मान ली, परन्तु कप्तान जोली बैठेही रहे और उन्होने हेक्टर का साथ देना चाहा।

गुब्बारे में सन्नाटा था, सब सो गये, हाँ जागते थे तो केवल दोनों चौकसी करनेवाले ! परन्तु इनमें भी बात चीत बन्द थी। कप्तान साहब एक सींग की नली में तमाखू भरकर सुलगाने लगे ! कुछही देर उपरान्त तमाखू सुलग गई, और कप्तान साहब गुब्बारे के एक कोने में बैठ कर उसे पीने लगे और साथही पृथ्वी की ओर भी देखते जाते थे ! उन्हें हाथ भर के दूर की भी कोई वस्तु न दिखाई पड़ती थी।

हेक्टर एक ओर बैठा हुआ अपने ध्यान में डूबा था। लेगोस से चलने के उपरान्त इन दो तीन दिनों में ऐसी घटना पर घटना आन उपस्थित हुई, कि उसे निज अवस्था पर बिचार करने का कोई समयही न मिला। लण्डन छोड़े उसे एकही दिन मालूम होता था ! इस्के इस ध्यान ने उस्के घबड़ाये हाथों को गले में पड़े हुये यंत्र की ओर बढ़ाया और वह उसे ठीक उसी प्रकार पाकर प्रसन्न हुआ जैसे कोई कंजूस अपनी अतुल और छिपी सम्पत्ति को देखकर गद्गद होता है ! वह उस यन्त्र की बड़ी रक्षा और खबरदारी करता था यहां तक कि उस्का सच्चा मित्र फिलिप भी इस्बात से बिलकुल अनजान था।

अकस्मात् कप्तान साहब के चिल्लाने से हेक्टर का ध्यान भङ्ग हो गया और वह उनकी ओर देखने लगा।

कप्तान—अहाहा! देखो कैसा प्रकाश हो रहा है! और भई मेरी हड्डियांही गलें यदि वहां काले देवों का नाच न होता हो!

हेक्टर भी उन्हीं के पास जा बैठा, और वहां से जाकर देखा तो एक जगह जलती आग के चारों ओर बहुत से नङ्गे २ और काले २ जङ्गली नाच रहे हैं।

जैसेही गुब्बारा उनके ऊपर से होकर जाने लगा वैसेही कप्तान साहब ने एक बड़ाही सुन्दर दर्पण ठीक उनके बीच में फेंक दिया जो आग के निकटही जा गिरा, वह आश्चर्ययुक्त जङ्गली उस चमकती हुई बस्तु को लेने के निमित्त झपटे और आपस में लड़ने लगे। कुछही काल उपरान्त वे सब भी आखों से छिप गये। इतने में सहसा किसी ने हेक्टर के कन्धे पर हाथ रख दिया, इसने जो फिर कर देखा तो सर बिल्फ्रेड को पाया जो कह रहे थे "हेक्टर! अब तुम्हारी पारी है जाओ सो रहो।"

हेक्टर और कप्तान दोनोंहीं ने पहरा बदलवाया और जाकर सो रहे। सर बिल्फ्रेड चौकसी पर थे!

आकाश निर्मल हो गया था आँधी का कहीं अब नाम भी न था, तारे चारों ओर प्रसन्नता से चमक रहे थे वायु भी इच्छानुसार कोने की ओर चल रही थी। सर बिल्फ्रेड चुपचाप बैठे नकसा और कम्पास देख रहे थे, देखते २ न जाने चित्त

कहां पहुँचा कि उनके नेत्रों से दो चार बून्दें जल की टपक पड़ीं। उर्ध स्वास लेकर अभी उन्होंने अपनी बैठक बदली होगी कि किसी वस्तु को देखकर चौंक गये, और अपने साथियों को जल्दी २ उठाने लगे।

इनके चेहरे से प्रसन्नता झलक रही थी और यह एक ओर को देखते जाते थे। सब साथी इनके जगातेही उठ बैठे, परन्तु केवल चेको एक स्थान से उठकर दूसरे स्थान में जा सोया। सर बिल्फ्रेड ने सबको एक ओर कहा "वह देखो"। छोटे झुण्ड की दृष्टि उधर पड़तेही सबके सब बड़ीही प्रसन्नता से चिल्ला उठे, "हमलोग शेड झील पर पहुँच गये! धन्य ईश्वर" और यह शब्द कुछ इस जोर से कहे गये कि चेको जो सो रहा था चौंक कर उठ बैठा।

इनलोगों को पश्चिम की ओर एक बड़ा हराभरा मैदान दिखाई पड़ा। सूर्य देव की किरनें, जो कुछ ऊँचे हो गये थे उस मैदान में आड़ी होकर पड़ रही थी। अनगिनती खेत उन गावों के सहित जो जङ्गली जातिओं से बसे हुये थे इधर उधर छिटके दिखाई देते थे। पानी के सोते और छोटे २ नाले जिनके दोनों ओर घने जङ्गल लगे हुये थे चारों ओर फैले दिखाई देते थे। इसी के निकटही जल का एक बड़ा भारी भाग पृथ्वी पर फैला हुआ दिखाई दिया। यही शेड झील थी, बार्थ नामी भ्रमण करनेवाले ने इस्का पता लगाया था, लम्बाई इस झील की २०० मील और चौड़ाई इस्की १४० मील की थी। झील

के चारों ओर एक चौड़ा और घना बन लगा हुआ था जिसके मध्य में अनगिनती टापू बड़ीही भयानक जातियों से, जो अपने लूट मार के निमित्त प्रसिद्ध थे बसा हुआ था। सर विल्फ्रेड ने इसी जाति के प्रति कुछ कहना प्रारम्भ किया और कहा इस जाति का नाम बुदमा है; बस इस्के आगे सर विल्फ्रेड और कुछ न कह सके, उनके मुंह से भय के मारे शब्द न निकलता था उनके साथी भी इस्बात को समझ गये।

सर विल्फ्रेड—अस्तु! जो कुछ हो काम तो हम लोगों ने वह किया जो अभी लों किसी तवारीख़ में लिखा नहीं गया, और न किसी से हो सका, ईश्वर का धन्यबाद है कि उसने वायु को हमारे इच्छानुसार रक्खा, हम लेगोस से ३० अगस्त की सन्ध्या को ३ बजे चले थे और आज दूसरी सितम्बर है। और अब दिनके नौ बजे हैं। ४२ घण्टे में हमने एक सहस्त्र मील का मार्ग समाप्त किया। इस्में भी कितने स्थान के बखेड़ों में फँस चुके भला इस्का कोई काह को विश्वास मानेगा। हम लोगों को दो दिन से भी कम समय, वहां लों पहुँचने में लगा, जहां दूसरे भ्रमण करनेवाले कई मास में पहुँचेंगे।

नवाँ बयान।

झील जब प्रथम देखी गई थी, तो वह गुब्बारे से ६ मील के अन्तर पर थी, और गुब्बारा बड़ीही शीघ्रता से उस्की ओर

उड़ा चला जाता था। यह एक आवश्यकीय बात थी कि गुब्बारे को अब नीचा कर दें।

सर विल्फ्रेड—हमलोगों को किनारे बहुतही निकट न जाना चाहिये, वहां यदि कहीं बुदमा मिल गये तो फिर एक भी काम न होगा।

इनका केवल नामही मात्र लेने से चेको काँपने लगा और सर विल्फ्रेड के पैरों से लपट कर बोला "न न वहां मतजाना, उधर सब खराब लोग रहता है, जो चेको को फिर गुलाम बना लेगा और बाकी सबको मार डालेगा" सर विल्फ्रेड ने बड़ीही कठिनता से उस अशान्ती को चुप कराया और अपने साथियों की ओर फिर कर बोले "यह इस बेचारे का दोष नहीं, यह उन लोगों के कठिन बन्धन में चार वर्ष पर्यन्त गुलाम रह चुका है, और मेरी स्वयं इच्छा, उनमें फँसने की नहीं है। अच्छा हेक्टर अब हमें नीचे उतरना चाहिये"।

हेक्टर ने यह सुन्तेही, लङ्गर फेंक दिया और गुब्बारा नीचे उतरने लगा परन्तु अभी यह १०० फीट की ऊँचाई पर रहा होगा कि एक और दैवी दुर्घटना सङ्घटित हुई, अर्थात वायु दूसरी ओर बहने लगी। यह देखतेही कप्तान जोली गला फाड़ के चिल्ला उठे "हाय! अरे यह कहां जाता है? यह अच्छा नहीं, ले यारो; अब पहुँचने की आशा से हाथ धोओ"।

सर विल्फ्रेड—वाह! इससे उत्तम और क्या होगा, वायु हमारेही इच्छानुसार चल रही है! इस ओर एक बड़ा नगर है

वहीं चलके डेरा जमेगा यह कहकर उन्हों ने दूर कुछ मकानों की ओर इंगित किया जो वृक्षों में छिपे हुये थे। अब वे लोग एक बड़े लम्बे चौड़े मैदान पर से जा रहे थे जिस्में झुण्ड के झुण्ड गाय बैलों के चर रहे थे। भला यहां कौन ऐसी बस्तु थी जिस्से लङ्गर अटकता। अब दो आपत्तियां सामने थीं एक तो यह कि यदि लङ्गर नहीं अटकता तो गुब्बारा उतरते २ पृथ्वी तक आ रहेगा, और टूट जायगा! दूसरे यह कि यदि वह उसी ऊँचाई से जिस्पर कि जा रहा था नगर में पहुँचा तो अवश्य किसी मकान से टकरा कर नष्ट हो जायगा।

गुब्बारा अब ३० फीट की ऊँचाई से उड़ता हुआ नगर में जा पहुँचा। नगरवासी आश्चर्य से मुंह उठाये इसे देख २ कर इधर उधर दौड़ रहे थे बहुत से इस्में हथियारबन्द थे जो अपनी बन्दूकें छतिया रहे थे। क्रमशः चलते २ जब वे बजारों के ऊपर से चले तो सर विल्फ्रेड ने चिल्लाकर कुछ शोवा भाषा में कहा! जिस्का फल तत्क्षण दिखाई पड़ा, अर्थात् वह हुल्लड़ सब मिट गया और हथियार रख दिये गये!

अब इन्होंने लङ्गर के अटकाने की इच्छा की और इन्हे आशा थी कि वह किसी मकान अथवा किसी वृक्ष में अटक जायगा। परन्तु नहीं; जो सोचा था उस्का फल विपरीत हुआ, लङ्गर बड़ीही शीघ्रता से सनसनाता हुआ जा रहा था; और अपनी भयानक चाल से अब उसने हानि प्रारम्भ की! अर्थात् बड़े बेग से जाकर एक मसजिद के गुम्बद से टकराया, जो तुरन्त

लहराकर भूतलशायी हो गया। इस्के नीचे कई मुल्ला और बहुत से मनुष्य जो निमाज पढ़ने आये थे ज़खमी हुये। इस्के उपरान्त ३ गुम्बद और चार छतें इसने और गिरा दिये!

यह आपत्ति कुछ ऐसी अचांचक आई थी कि किसी से कुछ करते धरते न बन पड़ा और अब गुब्बारा उसी तरह चौक में जा पहुँचा, यहां सहस्त्रों मनुष्य की भीड़ एकत्रित थी कारबारी अपने २ काम में लगे थे। सर विल्फ्रेड ने चाहा कि उन्हें इस आनेवाली आपत्ति से सचेत करदें! पर न हो सका, लङ्गर उसी प्रकार भीषण नाद करता हुआ उनमें जा पहुँचा जिसे देखतेही सब इधर उधर भागने लगे। एक ओर बहुत से गुलाम विक्री के निमित्त बिठाये गये थे; लङ्गर उसी ओर चला।

सर विल्फ्रेड ने जल का पीपा ऊपर से फेंक दिया जिस्से गुब्बारा ऊपर उठा! उठने के साथही एक ऐसा झटका लगा जिस्से सब हिल गये। सर विल्फ्रेड ने झपट कर नीचे की ओर देखा तो एक कौतूहलयुक्त दृश्य दीख पड़ा, अर्थात् लङ्गर में एक गुलाम लटक रहा था जिस्की हथकड़ी उस्में फँस गई थी और इस गुलाम के बोझ के कारण गुब्बारा पुनः नीचे उतर गया, और वह बेचारा हबसी केवल दो फीट की ऊँचाई से उड़ता चला जाता था, अब सबको पूरी आशा हो गई कि गु-लाम नहीं बच सक्ता कारण यह कि एक बिशाल अट्टालिका जो बड़ीही शीघ्रता से निकट आ रही थी उस्से यह टकराये

गा और उस्की खोपड़ी टुकड़े २ हो जायगी । परन्तु उसी समय सर विल्फ्रेड ने उस्के छुटकारे की एक तदबीर निकाली अर्थात् खिलौने, कैंची शीशे, और बहुतसी व्यापार की चीजें उन्होंने उठाकर नीचे फेंक दीं साथही हेक्टर ने मांस का एक बड़ा सन्दूक भी उपर से गिरा दिया। इस शीघ्रता ने उस हबसी की प्राणरक्षा की अर्थात् गुब्बारा ऊपर उठा और उस मकान के ऊपर से होकर लङ्गर निकल गया। परन्तु इस्के कुछ देर उपरान्त ही एक और नई आपत्ति आई अर्थात् वह लम्बा रस्सा जिस्में गुलाम लटक रहा था बीचों बीच, जाकर एक मकान के छज्जे से अटक गया, जिस्से गुब्बारा आगे न बढ़ सका और वह गुलाम भी इस अकस्मात् के झटके से इधर उधर झूलने लगा और ऊपर से, वे अनेक युक्तियां जो उस रस्से के छुड़ाने के निमित्त की जाती थीं बेकाम हुईं।

उधर नगरबासी बड़ेही क्रोध से अस्त्र शस्त्र लिये गुब्बारे की ओर दौड़े चले आते थे। हेक्टर ने चिल्लाकर कहा "रस्सी की सीढ़ी शीघ्र लगादो मैं उतरकर उस छज्जे से रस्सा छुड़ा दूंगा" यह सुनकर पहले तो सर विल्फ्रेड हिचकिचाये परन्तु हेक्टर ने तुरन्त सीढ़ी लटकाई और जल्दी २ उतरने लगा! और अभी वह छज्जे तक पहुँचा भी न होगा कि उस्के साथी ऊपर से चिल्ला उठे, और अब इसने जो उनके चिल्लाने का कारण देखा तो हाथ पाँवही फूल गये।

दसवाँ बयान ।

एक बड़ा लम्बा हबशी भयानक सूरत बनाये, अपनी लोहे की तीक्षण तीर द्वार हेक्टर को माराही चाहता था ! कमान कान पर्यन्त खिंच गई थी ! तीर छूटने में अब विलम्बही क्या था, कि साथही बेलून पर से दन्नाटा हुआ ; और सर विल्फ्रेड की बन्दूक से सनसानती हुई गोली ने निकलकर उस हबशी की खोपड़ी में अपना स्थान बनाया, और वह पलट कर जमीन पर छटपटाने लगा । इस्के पीछे और बहुत से लोग बढ़ आये और अपने साथी का बदला लिया चाहते थे परन्तु हेक्टर की शीघ्रता उनसे कहीं बढ़ी चढ़ी थी, उसने तुरन्त वहां से रस्सा छुड़ा दिया ; रस्सा छूटतेही बेलून ऊपर उठा, और हेक्टर उसी सीढ़ी पर बड़ीही शीघ्रता से चक्कर खाने लगा, परन्तु उस्के साथियों ने तुरन्त उसे ऊपर खींच लिया । इस्के उपरान्त गुलाम भी ऊपर लाया गया और सर विल्फ्रेड ने और कुछ कहने के पहले दो सन्दूक बिसकुट के नीचे फेंक दिये, जिस्से गुब्बारा और भी ऊँचा होकर शीघ्रता से आगे जाने लगा । ६ अरबी सवार भी गुब्बारे के साथही साथ चले पर वे कुछही दूरमें दृष्टि से लोप हो गये । इधर से निश्चिन्त होकर सर विल्फ्रेड; उस हबशी गुलाम की ओर फिरे । हबशी, शरीर से दुबला पतला, और रङ्ग का भूरा था उसके सिर के बाल लम्बे और काले थे ! उस्के शरीर से जान पड़ता था कि वह बहुत दिनों पर्यन्त गुलामी में रह चुका है । अभी तक वह अचेतही थां परन्तु ब्रांडी की दस पाँच बूंदों ने

इसे तुरन्त सचेत कर दिया, होश आतेही वह उठा और एक कोने में जा बैठा।

सर विल्फ्रेड—वास्तव में हमसे बड़ीही चूक हो गई ; इस एक गुलाम के कारण हमने शोवा जातिमात्र को अपना शत्रु बना लिया, यह बड़ी कठिनता हुई ! और यह हबशी बुदमा जाति का जान पड़ता है क्योंकि रूपरङ्ग उन्हीं का सा है। मुझे भली प्रकार मालूम है कि बुदमा तथा शोवा जाति में सदैव लड़ाई रहती है।

कप्तान—जी हां ! आप ठीक कहते हैं ! चेको भी यही कहता है।

अब सबने उस अशान्ती की ओर देखा जो उस गुलाम की ओर भय और घृणा से देख रहा था। वह चिल्ला उठा "यह खराब आदमी, बुदमा है बुदमा, मैं इन सब को जानता हूं बड़ा २ टापू में इनका घर—" यह कहकर उस अशान्ती ने चाहा कि उस बुदमा को नीचे फेंक दें, परन्तु साथही सर विल्फ्रेड ने घुड़क दिया।

उस बुदमा को इन बातों से कोई सम्बन्ध न था वह चुप चाप बैठा हुआ पृथ्वी की ओर देख रहा था, और जब कप्तान जोली ने उसे कुछ बिस्कुट दिये तो वह मरभुक्खों की भाँति खाने लगा। इस्की उम्र लगभग २० वर्ष के होगी।

अरबों का नगर यहां से १२ मील के अन्तर पर पीछे छूट गया। नीचे के खुले मैदान में कोई जीव जन्तु नहीं दिखाई

देता था। उनसे पूरब की ओर शेड झील लहरें मार रही थी !

सर विल्फ्रेड—(शान्त भाव से) हम अब झील की ओर बड़ी शीघ्रता से जा रहे हैं और हमारी गेस का अब अन्त है।

हेक्टर—तो आपको भय केवल इस्बात का है कि हम लोग कहां उतरेंगे ?

सर विल्फ्रेड—हां !

हेक्टर—(फिलिप से) कुछ तो अवश्य करना चाहिये ! यदि गुब्बारा झील पर पहुँच गया तो हम सब मारे पड़ेंगे।

सर विल्फ्रेड—हम तीनों ओर से गये, या तो डूबे, या मगर-मच्छों के पेट में जाना स्वीकार करें; और या बुद्मा जाति के गुलाम बनना स्वीकार करें।

बेलून अब केवल ३० या ४० फीट की ऊँचाई पर से जा रहा था। सर विल्फ्रेड ने शीघ्रता से लङ्गर में एक और रस्सा बाँधा जिस्से उस्की लम्बाई पचास फीट हो गई ! और खड़े होकर उसे बड़े बेगसे फेंक दिया। सबलोग बड़ीही उत्सुकता से उस लङ्गर का जाना देख रहे थे। लङ्गर पृथ्वी पर गिरा और घासों में छिप गया, साथही पानी के चीरने का शब्द सुन पड़ा, और मछलियां तथा अन्य जल के जीव जन्तु पानी के ऊपर भागते दिखाई पड़े।

सर विल्फ्रेड—(चिल्लाकर) तब नहीं तो अब सही ! हमलोग कई मील से झील पर चल रहे हैं और हमें बिलकुल जान न पड़ा यह सरकण्डों का बन है, जिसे बार्थ नामी भ्रमण करने

वाला "अपार" कह गया है, और जिस्में उसने स्वयं अपनेही जावन को नष्ट किया, यदि यहां गुब्बारा गिरा तो हम सब मृत्यु के मुंह में जांयगे, और अब आगे वह देखो झील है। यह कहकर उन्होंने लङ्गर उठा लिया।

सर विल्फ्रेड—गुब्बारा उतरता चला जाता है सब बेकाम चीजें नीचे फेंक दो, बस प्राणरक्षा का यही एक उपाय है, इस्से यदि ईश्वर ने चाहा तो हम उस पार होंगे।

यह सुनकर कप्तान जोली ने दूसरा पानी का पीपा तथा गोलियों के थैले फेंक दिये। इस्के फेंकने से गुब्बारा कुछ ऊँचा हुआ और जल से केवल १५ फीट ऊपर जाने लगा, और कुछही काल के उपरान्त यह पुनः नीचे उतरने लगा।

सर विल्फ्रेड ने अबकी कुल कम्बल फेंक दिये, और दूसरा सन्दूक बारूद का भी फेंक दिया।

अब गुब्बारा २० फीट ऊँचा हो गया और आधे माइल पर्यन्त इसी ऊँचाई पर चला गया, और फिर वह यहां लों नीचा हुआ, कि लम्बे २ सरकण्डे खटोलने के चारों ओर से होकर जाने लगे। कप्तान जोली ने अपनी बन्दूक उठाकर फेंक दी उनकी देखादेखी सर विल्फ्रेड ने भी फेंक दी।

अब गुब्बारा फिर उठा परन्तु साथही सर विल्फ्रेड के मुंह से एक "चीख" निकल गई! उनके साथियों ने देखा कि अब उनसे केवल ५० गज के अन्तर पर खुली हुई झील थी! इस्का दाहिना और बायां किनारा कुछ योहीं सा

दिखाई देता था ! हां अनगिनती टापू अवश्यही बीच २ में दिखाई पड़ते थे। परन्तु उनसे दसही गज के अन्तर पर जहां से झील का जल गहरा हो चला था, झुण्ड के झुण्ड दरियाई घोड़े और मगरमच्छों के समूह इधर उधर जल में खेल रहे थे।

क्रमशः गुब्बारे ने सरकण्डे के बन को समाप्त किया और अब झील के निर्मल जल पर अपनी परछाईं डालता आगे बढ़ा चला जाता था। और अब यह जल से केवल बारह फीट ऊँचा था। मगरमच्छ ऐसी आश्चर्यजनक वस्तु को देखकर और मनुष्य की गन्ध पाकर अपने लम्बे २ मुंह खोलकर ऊपर की ओर देखने लगे।

सर विलफ्रेड बड़ीही गम्भीरता से उन्हें देख रहे थे। उन के साथी तो यह दृश्य देखतेही पीले पड़ गये थे और गुब्बारा भी क्रमशः उतरताही जाता था ! सर विलफ्रेड ने यह देखकर अपने जेब के कुल रुपये पैसे जल में डाल दिये, और यह देखकर उनके साथियों ने भी उन्हीं की नकल उतारी।

ग्यारहवाँ बयान।

इन छोटी २ वस्तुओं के फेंक देने से गुब्बारे पर कोई विशेष असर न हुआ वह अपनी उसी चाल पर जल से ६ फीट ऊँचा आगे चला जाता था, तमाखू के थैले पर अभी किसी का ध्यान नहीं गया था ! हेक्टर की दृष्टि इसपर पड़ गई और उसने

तुरन्त उसे उठाकर नीचे फेंक दिया ! उन घड़ियालों को जो उसे उत्तम भोजन समझे हुये थे खातेही बड़ी घृणा हो गई ! गुब्बारा अब कुछ ऊपर उठा परन्तु फिर तिरछा होकर जल की ओर चला ।

सबने यह निश्चय कर लिया कि अब कोई शक्ति सिवाय परमेश्वर के हमलोगों की सहायक नहीं हो सक्ती ! आशा उत्तर दे चुकी थी ! कि सहसा सब की दृष्टि उस अधमुये बुदमा पर पड़ी ! और एकही ध्यान उसी समय सब के चित्त में आया कि यदि यह व्यक्ति नीचे फेंक दिया जाय तो आशा है कि उनके प्राण बच जांय ! क्योंकि वास्तव में तो उस्की कोई आवश्यक्ताही न थी । वही बुदमा जो अपने लूटमार के कारण विख्यात हो रहे हैं ! और उसी जाति का यदि यह मर जावे, तो अवश्य उनकी अतुल संख्या में से एक घट जावेगा। परन्तु नहीं सर विल्फ्रेड ने अपना मस्तक हिलाया और अपने साथियों की ओर देखकर सकोप बोले " नहीं ! यह कदापि न होगा !!! यह बात ठीक हत्या के तुल्य होगी ऐसा भौरी कलङ्क अपनी आत्मा पर लगा के जीने से मर जाना उत्तम है ! यदि मैं समझता कि इस्से कोई विशेष लाभ होगा तो मैं अपनी बची, बन्दूकें बारूद और गोली न फेंक देता, परन्तु इस्के फेंकने से अपने हाथों अपने दुख की चादर को बढ़ाने के अतिरिक्त और कोई लाभ नहीं। ईश्वर पर निर्भर रहो ।

सर विल्फ्रेड के चेहरे पर इस समय एक प्रकार की जोति थी

और उन्होंने अपनी दृष्टि आकाश पर डालकर फिर अपने साथियों पर फेरी जिस्से यह प्रगट होता था कि मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि मर्द को किस प्रकार की मृत्यु से मरना चाहिये।

घड़ियाल और अन्य जल के भयानक जीव, खटोलने के चारों ओर, जो जल से केवल ३ फीट ऊँचा था, जमा हो रहे थे। जहां लों दृष्टि काम करती थी चारों ओर काले २ धब्बे दिखाई देते थे। चेको गुब्बारे की रस्सियों से लपटा हुआ गला फाड़ २ कर चिल्ला रहा था, ऐसा जान पड़ता था कि मानो ईश्वर इन वायु पर भ्रमण करनेवालों को अपने सृष्टि की विरुद्धता करते देखकर क्रुद्ध हुआ है और वह अब इन्हें दण्ड दिया चाहता है। जब कि वे सभी इस दैवी कोप में फँसे हुये थे तो ऐसे समय हेक्टर उछल पड़ा, और जोर से कहने लगा कि अब भी एक उपाय बाकी है। हम लगभग एक सौ पाउंड का बोझ नीचे फेंक सक्ते हैं! खटोलने को काट दीजिये! और गुब्बारे के रस्सों में लटक कर बैठ जाइये।

सर विल्फ्रेड—लड़का उचित कहता है! बस यही अन्तिम उपाय है। उन्होंने हेक्टर को इस्के बदले गले से लगा लिया! और जैसेही यह उपाय ध्यान में आया वैसेही उस्के अनुसार कार्य भी प्रारम्भ हो गया। सर विल्फ्रेड ने नकसा और कम्पास अपनी जेब में डाल लिया, बन्दूकें और कारतूस के थैले गुब्बारे की रस्सियों से बाँध दिये गये! रस्सी की सीढ़ी हेक्टर ने अपने कमर में लपेट ली! अब कप्तान जोली ने उस बुदमा को पकड़

कर रस्सियों पर बैठाना चाहा परन्तु उसने इतना उपद्रव मचाया कि विवस हो इन्हें उसे उसी खटोलने में छोड़ देना पड़ा।

सर विल्फ्रेड—अजी क्यों व्यर्थ उद्योग करते हो, भला वह कभी तुम्हारे बैठाये उस्पर बैठनेवाला है। इसे खटोलनेही में रहने दो, और फिर खटोलने के चारों ओर मोमजामा लगा है इस्से वह डूबेगा भी तो नहीं! और तबसे वह डोंगे जो दूर दिखाई देते हैं इसे पकड़ लेंगे! बस अब तुमलोग ऊपर चढ़ो!

सर विल्फ्रेड के यह कहने की कोई आवश्यक्ता न थी! सब के सब एकदम रस्सों पर चढ़ गये! चेको सब से आगे था। वह बन्दर की भाँति गुब्बारे के सबसे ऊंचे भाग में जा टँगा।

जैसेही गुब्बारा खटोलने से छूटा वह लहराता हुआ ऊपर चला, कुछ देर पर्यन्त तो सबको यही ज्ञात होता था कि अब मृत्यु में कुछ विलम्ब नहीं! परन्तु ईश्वर सहायक है! वे बचे! और उन घड़ियालों के मुंह से एक बहुतही उत्तम भोजन निकल गया! निकल इसलिये गया कि हेक्टर ने उन रस्सों को जिनके साथ खटोलना बँधा था और जिसे जल पर तैरने के कारण घड़ियाल लोग पकड़ा चाहते थे एक के उपरान्त दूसरे को छुरी से काट दिया।

गुब्बारा बीस फीट की उँचाई पर वायु के झोंके के साथही साथ पूर्व दिशा की ओर जाने लगा। वह बुद्गा खटोलने में बैठा जल पर [illegible] खड़ [illegible]तने में कुछ डोंगे

उस्की ओर छूटे। यह देखकर सर विल्फ्रेड ने कहा, कि उस्के मित्र अब उस्की प्राण रक्षा कर लेंगे।

कप्तान—और ठीक उसी का उलटा हमारे साथ भी तो करेंगे।

डोंगे पर बैठे हुये जङ्गलियों ने अपनी बरछियां गुब्बारे की ओर सीधी की परन्तु वह उनके सिर पर से निकल गया, और उस टापू की ओर चला जो आध मील के अन्तर पर था। यह टापू किनारे २ एक हरे भरे बन द्वारा ढँका हुआ था, और वह गुब्बारा बिना खटोलने के जिस्की रस्सियों में ५ मनुष्य लटक रहे थे एक बड़ाही विचित्र दृष्य, दिखला रहा था।

हेक्टर—हमलोग उस टापू तक अवश्य पहुंचेंगे पर कहीं ऐसा न हो कि गुब्बारा किसी वृक्ष से टकरा जाय।

सर विल्फ्रेड—जो कुछ हमलोगों पर बीते, उसे ईश्वर के धन्यवाद के साथही साथ सहन करना होगा, जिसने हमारे प्राण उन भयानक जन्तुयों से बचाये, और आशा है कि वही हमें इस निर्दयी जाति के हाथों से भी बचायेगा।

समय बात चीत करने का न था, गुब्बारा ऐसा सीधा टापू के ओर जा रहा था जैसे कोई गुप्त हाथ उसे वहां पहुँचा रहा है। इस्के सामनेही डोंगो का एक बड़ा भुण्ड खड़ा था और उन्हीं के उपरान्त किनारे से होती हुई एक चौड़ी सड़क टापू के भीतर की ओर चली गई थी।

शीघ्रता से उड़ता हुआ गुब्बारा पानी पर से होकर उस किनारेवाले बन को भी पार कर एक बस्ती में जा पहुँचा। यहां सहस्त्रों जङ्गली एकत्रित थे और ऐसा जान पड़ता था कि मानों वे इनके आने की बाट जोह रहे थे। इनके पहुँचतेही उन्होंने अपनी तीर तथा बरछियां उठाईं और बड़ा भारी हुल्लड़ मचाया, कि इतने में एक ने उनमें से एक बड़ा भारी पत्थर उठाया, और उस गुब्बारे पर खींच कर मारा। पत्थर के लगतेही गुब्बारा बड़ीही शीघ्रता से पृथ्वी की ओर चला और वे पाचों व्यक्ति उसमें लिपटे लिपटाये, पृथ्वी पर आ रहे। उस समय की चिल्लाहट का वर्णन किसी प्रकार नहीं हो सक्ता चारों ओर की चिङ्घाड़ से कान के पर्दे फटे जाते थे। बेचारे पथिक अब एक २ करके क्रमशः गुब्बारे के बाहर निकलने लगे, और निकलतेही उन पर गाली गलौज की चारों ओर से बौछार होने लगी। सब बाहर निकल आये और उन बुदमाओं ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया। उनकी दृष्टि से जान पड़ता था कि वे बड़े क्रोध में हैं परन्तु वे कोई शारीरिक कष्ट इन लोगों को नहीं पहुँचाते थे। इस समय की यदि कोई तस्वीर खींचता तो बड़ीही भली होती। वह बड़ा गुब्बारा जो किसी समय तूफान को चीरता वायु में अठखेलियां करता आकाश में उड़ता था अब कैसे एक बुरे ढेर की भांति पृथ्वी पर पड़ा है! वही पांचों पथिक जो उस्पर बैठे २ मनोहर दृश्य देखा करते थे। अब कैसे चोरों की भांति उसी के निकट खड़े कांप रहे हैं। और

वे पिशाच जिन्होंने उनका भ्रमण ऐसी कुटिलता से रोक दिया था उनके चारों ओर जिव्हा निकाले खड़े थे और उनके रक्त पीने की चिन्ता अपने चित्त में कर रहे थे।

चेको तो अधमुवों की भांति पृथ्वी पर लोट गया परन्तु उन चारों मनुष्यों की अवस्था इस्से कहीं पृथक् थी। हेक्टर तथा फिलिप का मुंह तो भोला था और हमारे कप्तान साहब बहादुर की कान्ति में खिसियानापन झलक रहा था। परन्तु सर विल्फ्रेड इस प्रकार खड़े थे कि मानों वे अपनी मित्रमण्डली के साथ हैं, या यों कहिये कि मानों वे वक्तृता दे रहे थे और उनकी प्रशंसा करते हुये सुन्नेवाले उनके चारों ओर खड़े थे। उन्होंने पलट कर अपने साथियों से कहा कि कोई बात ऐसी मत कहना जिस्से यह जाति रुष्ट हो जाय। जो ये कहे सो करो और अपना भय न प्रगट होने दो!

पांच मिनिट पर्यन्त तो वे जङ्गली उन्हें घेरे हुल्लड़ मचा रहे थे कि इतने में और १२ मनुष्य जो देखने में उनसे भी भयानक थे और हाथों में लम्बी २ बर्छियां लिये हुये थे आये और उस भीड़ को हटाकर अपने कैदियों पर कड़ाई से हाथ रक्खा। अब चारों ओर सन्नाटा हो गया।

बारहवां बयान।

पहिले तो उन कैदियों को विश्वास हो गया कि हम अभी मारे जायँगे! परन्तु नहीं उस गारद के सिपाहियों ने उनको गांव के दूसरे

ओर पर ले जाकर एक झोपड़े में ढकेल दिया और स्वयं पहरा देने लगे।

सर विल्फ्रेड—प्यारे भाइयो ! उत्तम होगा कि अब अपनी अवस्था मैं तुम लोगों को स्पष्ट रूप से समझा दूं ! यह जाति बड़ीही निर्दई होती है। यह किसी को कैद नहीं रखते, वरन् बध कर डालते हैं। बड़ेही भयानक मनुष्यों से हमारा पाला पड़ा है !

इस बात को चेको ने भी सकारा। उस बेचारे के मुंह से कोई शब्द न निकलता था। वे लोग उसी प्रकार उस अन्धकार में पड़े हुये थे और बाहर सहस्त्रों जङ्गलियों की भयानक चिङ्घाड़ सुन पड़ती थी कि सहसा उनकी चिल्लाहट और भी बढ़ गई।

सर विल०—यदि हमारा ध्यान ठीक है, तो हम लोगों के भाग्यों का निर्णय हो गया और ये जङ्गली उसी की प्रसन्नता मना रहे हैं—

सर विल्फ्रेड यह कहतेही थे• कि झोपड़े की ओर आते बहुत से पैरों का शब्द सुन पड़ा। कैदी लोग उठ खड़े हुये। उधर झोपड़े का द्वार खुला और बहुत से बुदमाशों ने प्रवेश कर दो दो ने एक एक कैदी पर अधिकार जमा लिया, और बाहर ले चले। इसमें भी बेवकूफ चेको तनिक कठिनता से हाथ लगा। कुल राह जङ्गलियों से भरी हुई थी परन्तु जैसेही वे लोग सामने पहूँचे उन लोगों ने जाने के लिये राह

बना दी। यह लोग उसी अवस्था में उस स्थान पर लाये गये जहां गुब्बारा गिरा था और जो वहीं उसी तरह पड़ा हुआ था।

कप्तान जोली के चञ्चल नेत्र सहसा एक ऐसी बस्तु पर जा पड़े जिसे देखतेही वे एकदम चिल्ला उठे, "हाय मेरी हड्डियांही गलें!" इनकी इस बेतुकी हांक पर सब ने उस ओर दृष्टि फेरी तो देखा कि खटोलना भी वहीं पड़ा हुआ है। इतने में एक लम्बा जङ्गली एक दूसरे जङ्गली युवक के हाथ में हाथ दिये इन लोगों के निकट आया। यह जङ्गली युवक वही था जिस्को इन लोगों ने अकस्मात् अरबों के हाथ से छुड़ाया था। वह दूसरा लम्बा व्यक्ति और जङ्गलियों की अपेक्षा बुद्धिमान ज्ञान पड़ता था और वस्त्र इत्यादि भी बहुत उत्तम पहने हुये था। वह छुड़ाया हुआ युवक आगे बढ़ा और उसने सर विल्फ्रेड का हाथ पकड़ लिया और अपने पिता अर्थात् उस लम्बे व्यक्ति की ओर इंगित कर के किसी विचित्रही भाषा में बातचीत करनी प्रारम्भ की। इस्का उत्तर भी सर विल्फ्रेड ने उसी भाषा में देना प्रारम्भ किया जिसे देखकर उनके साथियों को बड़ाही आश्चर्य हुआ। सर विल्फ्रेड के साथी उनका एक भी शब्द नहीं समझते थे, और वे हैरान थे कि यह किस विषय पर २० मिनिट तक वादाविवाद कर रहे हैं। अन्त वह लम्बा व्यक्ति और युवक बुदमा अलग हुये, और यह प्रगट हुआ कि बातें समाप्त हुई।

सर विल्फ्रेड ने अब अपने साथियों की ओर देखा और धीरे से बोले, "अपनी असली अवस्था को छिपाओ, इन लोगों पर यह न प्रतीत होवे कि तुम बड़े प्रसन्न हो, ईश्वर ने हम लोगों की प्राणरक्षा की। कैसा उपयुक्त हुआ कि मैं एक वर्ष पहिले इस भाषा में मेहनत कर चुका था, और वह युवक बुदमा भी इस्का ज्ञाता है कदाचित् इसे उसने अर्बों द्वारा प्राप्त की होगी। भला बताओ तो वह है कौन ? तुम्हारा ध्यान भी नहीं पहुँच सक्ता। फिर उस लम्बे व्यक्ति की ओर इंगित करके बोले यह काशांगो इस बुदमा जाति का राजा है और वह लम्बा छुड़ाया हुआ युवक इसी का पुत्र अर्थात् राजकुमार है जो एक अर्बी लड़ाई में, अर्बों के हाथ पड़ गया था। कासांगो यह जानता है कि हम लोगों ने राजकुमार को जान बूझ कर छुड़ाया है और राजकुमार भी इस्के अतिरिक्त और कुछ नहीं जानता, अस्तु जो कुछ वे जानते हैं उन्हें जानने दो। राजा साहब ने अनेक प्रकार के प्रश्न हमसे गुब्बारे तथा उस्के बारे में पूछे, मैंने भी साफ २ अपने भ्रमण का हाल कह सुनाया। वह हमारा बड़ाही अनुगृहीत है उसने अनेक प्रकार की सहायता उस खोये हुये व्यक्ति के पता लगाने के बारे में देने को कहा है। वह दृढ़प्रतिज्ञ भी जान पड़ता है। अस्तु जो हो इस समय तो कोई भय हम लोगों को इनसे नहीं है। ईश्वर ने चाहा तो सब काम ठीक हो जायगा। परन्तु सावधान कोई चिन्ह भय इत्यादि के न प्रगट होने पायें!

पाठकगण ! आप स्वयं अनुमान कर सक्ते हैं कि उन मनुष्यों को कितनी प्रसन्नता प्राप्त हुई होगी, जो अभी क्षण भर हुआ अपनी भयानक मृत्यु की बाट जोह रहे थे।

राजा ने अपनी मित्रता यों प्रगट करनी प्रारम्भ की, कि सर विल्फ्रेड के कथनानुसार पहिले गुब्बारे तथा खटोलने को भली प्रकार लपेट कर रख देने की आज्ञा दी, और इसे उन जङ्गलियों से बड़ीही उत्तमता से प्रतिपालन किया। इस्के उपरान्त राजा ने अपने हाथों से बन्दूकें तथा अन्य बस्तु रस्सियों से खोलीं और सर विल्फ्रेड के हवाले कर दीं। सर विल्फ्रेड ने एक बन्दूक तो स्वयं ली और दूसरी कप्तान जोली के हाथ धरी, और तीसरी हेक्टर के हवाले की, कारतूस तथा गोलियों का थैला फिलिप के सुपुर्द किया गया। गुब्बारे की रक्षा के लिये सिपाहियों की एक गारद खड़ी कर दी गई ! उधर वे जङ्गली गला फाड़ २ कर आस्मान सिर पर उठाये थे, जो अपने हिसाब से बड़ी प्रसन्नता प्रगट कर रहे थे।

राजा ने अपने दोस्तों का हाथ पकड़ लिया और फिर अपने महल की ओर चले। यह महल एक बड़ा भारी झोपड़ा था। पृथ्वी पर लकड़ी के तख्ते लगे हुये थे उनपर जङ्गली जानवरों की खालें बिछी हुई थीं और दीवार पर भिन्न २ प्रकार के हथियार सजावट के लिये टँगे हुये थे। राजा अपने पुत्र सहित एक शेर बबर की खाल पर बैठा, और अपने दोस्तों को अपने सामने बैठने के लिये कहा।

सहसा राजा ने ३ तालियां बड़े ऊँचे शब्द से बजाईं और साथही दो गुलाम हाथों पर भोजन की सामग्री उठाये वहां आ पहुँचे, भोजन में चांवल, शहद, मठा, और मछली का मांस था जो एक प्रकार की लकड़ी की थाली में सब के सामने रक्खा गया। सर विल्फ्रेड आश्चर्य से उन गुलामों की ओर देखने लगे जो रङ्ग के काले, घुंघराले बाल वाले, और बड़ेही सुन्दर थे।

भोजन देखतेही सब के मुख पर प्रसन्नता झलकने लगी और सब ने राजा सहित खूब तन के भोजन किया।

भोजन का अन्त हुआ और अब यह सब दोस्त एक दूसरी कोठरी में जा बैठे।

सर विल्फ्रेड—(हेक्टर से) तुम्हें मैं एक समाचार सुनाऊं? कसाङ्गो ने कहीं से उड़ता हुआ समाचार पाया है कि यहां से बड़ीही दूर शाड झील के दक्खिन और पूर्व के कोने में किसी जाति के पास एक सुफेद व्यक्ति कैद है।

यह जाति कैसी? वा कितनी दूर है? यह कशाङ्गो नही जानता, इतना मालूम है कि नदी शारी जहां से निकलती है वहीं कहीं इस जाति के रहने का स्थान है, और वह भाग एफ्रिका का अभी लों किसी ने नहीं देखा। कशाङ्गो कहता है कि वहां जाना अपने को जान बूझ कर कुचक्र में डालना है। परन्तु इसपर भी वह सहायता के निमित्त तैयार है। जहां तक मैं अनुमान करता हूं निस्सन्देह वह सुफेद मनुष्य तुम्हारा पिताही होगा। वह पानी की बोतल जो चेको द्वारा मुझे प्राप्त हुई थी

नदी नाइजर से कैसे यहां बह के आई मुझे इस्का बड़ा आश्चर्य है। इस्में एक बड़ा भेद जान पड़ता है परन्तु ईश्वर ने चाहा तो सब खुल जायगा। परन्तु काशाङ्गो ने हमें एक झोपड़ा दिया है और उसी में सोने की सब सामग्री एकत्रित है तो चलो अब वहीं चलें!

सर विल्फ्रेड ने कुछ बातें राजा से कीं जिस्के कुछ मनुष्य उन्हें उस झोपड़े तक ले गये जो राजमहल से मिला हुआ था। दसही मिनिट के उपरान्त वे लोग निद्रा देवी की गोद में अचेत हो जा पड़े! और उधर सूर्यदेव ने भी अस्ताचल में जा, अपने मुंह पर नीली चादर तान ली।

तेहरवाँ बयान।

जिस समय ऊपर लिखी घटना राजमहल में संघटित हो रही थी ठीक उसी समय नगर के बाहर भी एक विचित्रही घटना अपना विस्तार फैला रही थी।

राजा की शरण में वे पथिक रातभर, और उस्के उपरान्त दोपहर पर्यन्त खूब पैर फैलाये मीठी नींद सो रहे थे। अब ये सब दोपहर को सोकर उठे और अपने झोपड़े से निकलकर राजा के दरबार में आये।

यहां उत्तम से उत्तम भोजन रक्खे हुये थे और सब लोग मानों उन्हीं की प्रतीक्षा कर रहे थे। राजा ने सब से हाथ मिलाया और अपने पास बैठा लिया, उधर एक चोबदार ने बाहर की खड़ी भीड़ को पुकार कर कहा।

"वायु में उड़नेवाले वह विचित्र आदमी अब शयनागार से निकले हैं"।

बहुत देर सोने के कारण इनलोगों की मानो गई हुई शक्ति फिर शरीर में आ गई ! वह सब प्रसन्न जान पड़ते थे, और चेको तो अपने साथियों की ऐसी स्वागत देखकर फूला न समाता था।

भोजन के उपरान्त सर विल्फ्रेड तथा राजा में इधर उधर की बातें प्रारम्भ हुई। सर विल्फ्रेड ने राजा से उस सुफेद व्यक्ति के बारे में कुछ प्रश्न किये परन्तु कोई उत्तर इच्छानुसार न मिला। परन्तु उसने इसबात की शपथ कर ली कि जब तुम उस मनुष्य की खोज में जाओगे तो मैं भली प्रकार तुम्हारे गुब्बारे की रक्षा करूंगा। राजा ने जो प्रतिज्ञा की थी उसे वह खूब जानता था कि निरर्थक होगी क्योंकि ऐसे भयावने स्थान से उनलोगों के फिरने की उसे बिल्कुल आशाही न थी। इसलिये सर विल्फ्रेड ने गुब्बारे के बारे में जैसा वादा चाहा तुरन्त पूरा कर दिया गया।

गुब्बारे से निश्चिन्त होकर सर विल्फ्रेड ने अपने साथियों से आगे बढ़ने के लिये सलाह लेनी प्रारम्भ की और कुछही देर में यह स्थिर हो गया, कि कुछ दिन राजा के मेहमान रह कर और इनसे नाव इत्यादि लेकर हमलोग चल खड़े हों। सर विल्फ्रेड को राजा की बातों पर बड़ा विश्वास था परन्तु शोक का विषय है कि जिस आपत्ति को आना था अब वह एकबारगी सिर पर आ पहुँची थी।

सन्ध्या को चार बजे एक भेदिये ने राजा को हाल पहुँचाया कि ६ अरब हाथों में हरी डालें लिये जो शान्ति का चिन्ह है डोंगों पर सवार इस ओर चले आ रहे हैं।

राजा को यह सुनकर बड़ाही आश्चर्य हुआ, उसने अपने मेहमानों को भीतर रहने के लिये कहा, और कुछ सभ्य व्यक्ति को उन आनेवालों की अगवानी करने के लिये भेजा।

सर विल्फ्रेड के चित्त में यह सुनतेही भय सा उत्पन्न हुआ, परन्तु उन्हों ने उसे प्रगट न होने दिया। अभी लों चारों ओर शान्ति थी पर सहसा एक बड़ा भारी हुल्लड़ प्रारम्भ हुआ और जंगलियों के झुण्ड के झुण्ड इधर उधर दौड़ने लगे।

सर विल्फ्रेड धीरे २ दरवाजे पर्यन्त गये परन्तु उस गारद ने जो दर्वाजे की रक्षा कर रहा था इन लोगों को भीतरही रहने को इंगित किया।

चारो ओर अब घटाटोप अन्धकार छा गया। हां नगर में स्थान २ पर प्रकाश हो रहा था। बहुत देर तक तो केवल बादाविबाद के शब्द सुन पड़ते थे परन्तु अब बड़े क्रोध से जंगलियों की चिल्लाहट सुनाई देने लगी।

सर विल्फ्रेड खड़े सोच रहे थे, सहसा बोल उठे, कि मैं अवश्य जानूंगा कि इस्का अर्थ क्या है? तुम लोग जहाँ हो वहीं रहो, मैं अभी आता हूं।

यह कह कर सर विल्फ्रेड किसी रास्ते से बाहर निकल गये। और एक खिड़की से जो नीचेवाले मैदान पर खुलती थी

देखने लगे। इधर उनके साथी बड़ीही उत्सुकता से उस हुल्लड़ को सुन रहे थे। ये लोग भूखे भी थे क्योंकि केवल इन्होने दोपहरही को भोजन किया था सहसा फिर भारी कोलाहल हुआ, और सर विल्फ्रेड ने अन्धकार में अपनी ओर एक साये को बढ़ते देखा, यह देखतेही वह वहां से हटे, और तुरन्त अपने साथियों में जा मिले।

सर विल्फ्रेड—दोस्तो ! बड़े बुरे समाचार सुन पड़े हैं! हमने जो राजकुमार के बचाने के निमित्त उस अरबी नगर को हानि पहुँचाई थी उस्का फल अब मिलता है। मैंने सब हाल खिड़की से, अपनी आँखों देखा। सहस्रों जंगली उन अरबों के चारो ओर एकत्रित हैं। जो कुछ मैंने सुना उस्से यही प्रतीत होता है कि अरब लोग राजा से हमलोगों को मांग रहे हैं और वे हमें भूत प्रेत प्रमाणित कर रहे हैं। उनकी वक्तृता का असर जंगलियों पर भली भांति जम गया है। काशांगो की बात कोई भी नहीं सुनता। ईश्वर जाने हम लोगों की क्या दशा होगी। परन्तु देखो हमारे पास ३ बन्दूकें हैं। यह अच्छी तरह ध्यान रखना कि हम अपने प्राण बड़ेही भारी मूल्य पर बेंचेंगे।

सर विल्फ्रेड की बातें सुन्तेही सबका रक्त सूख गया और चेको ज़ोर से चिल्ला उठा।

हेक्टर—तो क्या ये वही अरब हैं ? कि जिनसे बुदमा जाति से सदैव समर होती रही ! उनको यह साहस कैसे हुआ कि बैरी के नगर में चले आये ? काशांगो उनके पकड़ लेने की आज्ञा क्यों नहीं देता ?

सर विल्फ्रेड इस्का कुछ उत्तर दियाही चाहते थे, कि सहसा बाहर ऐसा बड़ा कोलाहल हुआ कि इनके मुंह से बात न निकली, और साथही उस झोपड़े का दरवाज़ा धड़ाके के के साथ खुला। और काशांगो ने कोठरी में प्रवेश किया। उसने सर विल्फ्रेड से बहुत शीघ्र कुछ बातें कीं और सर विल्फ्रेड ने तुरन्त फिरकर अपने साथियों से कहा "जिस बात से भय था वही आगे आई! अरबों की वक्तृता ने जंगलियों के चित्त पर भली भाँति अपना रंग जमा दिया है। राजा को कोई ध्यान में नहीं लाता। इसने अरबों को पकड़ने की भी आज्ञा दी परन्तु इस्को प्रजा ने अस्वीकार किया। किन्तु अब भी कुछ आशा है काशांगो हमें बचाने के लिये कह रहा है। परन्तु न जाने कैसे?

सर विल्फ्रेड के बात करते २ राजा चला गयाँ था और क्षणैक उपरान्त पुनः लौट आया। इस्बार उस्के साथ एक गुलाम भी था। राजा एक बन्दूक, एक बारूद और गोलियों का थैला और एक बर्छा अपने साथ लेता आया था। बन्दूक तथा बारूद का थैला तो उसने फिलिप को दिया और बर्छा चेको के हवाले किया। उस गुलाम के पास भी एक ढाल और एक बर्छा था।

काशांगो ने उस्की ओर इंगित करके कुछ बातें कहीं और वह उन लोगों को लेकर झोंपड़े की पिछली दीवार तोड़कर निकल गया।

सर विल्फ्रेड ने अपने साथियों से कहा, सावधान! अब वह समय अपनी २ बीरता प्रगट करने का है। काशांगो ने

इस गुलाम से प्रण किया है कि यदि यह हमें भली प्रकार झील के किनारे तक पहुँचा देगा तो यह गुलामी से मुक्त कर दिया जावेगा।

और कुछ कहने सुनने का समयही न था। जङ्गली बुद्मा, अपने आखेट को पकड़ने के लिये कोलाहल मचाते उसी ओर आ रहे थे।

काशांगो जब अपने महल की चहारदीवारीं के पास पहुँचा, तो उसे' अपने अतुल बल द्वारा एकही धक्के में गिरा दिया। जिस्में से छओ पथिक एक के उपरान्त दूसरे निकल आये।

सर विल्फ्रेड उस बीर बुद्मा को, विदा कहने के निमित्त क्षण एक ठहर गये, क्योंकि बिलम्ब करने में स्वयं इन्हीं के प्राण पर आ बनती।

" बिदा " कहतेही छओ मनुष्य बड़ीही शीघ्रता से नगर के बाहर भागे और झील का रास्ता पकड़ा। इनके पीछे का आकाश, सहस्त्रों मशालों के प्रकाश से लाल हो रहा था और अनगिनती पैरों के पड़ने से पृथ्वी काँप रही थी।

दौड़ते २ ये लोग नगर के बाहर पहुँचे, और अब जङ्गल में घुसे, कि सहसा भयानक कोलाहल नगर की ओर से सुन पड़ा, इस्का कारण जान लेना कोई बड़ी बात न थी उन जङ्गलियों को आखेट के भाग जाने का पता लग गया और वे अब कोलाहल मचाते जङ्गल की ओर, अर्थात् इन भागनेवालों के निकट चले आते थे।

बेचारे भागनेवाले, और भी शीघ्रता से भागे, और कितनेही स्थान पर बड़ी २ ठोकरें खाई पर इस्का ध्यान उन्हें उस प्रकाश ने, जो क्षण २ इनके निकट होता जाता था बिलकुल न होने दिया।

चौदहवां बयान।

अब इन लोगों को दृढ़ आशा हो गई कि भागना असम्भव है। वे कुछ दूर गये थे कि कुछ मशालों का प्रकाश उनके आगे हो गया। सर विल्फ्रेड घबड़ाकर चिल्ला उठे, " हमलोग घिर गये, सब एक साथ हो जाओ, और अपने निशाने ताक २ के लगाओ "। परन्तु वह गुलाम नहीं ठहरा, और जिधर वह प्रकाश दिखाई पड़ता था उसी ओर बढ़ा, और एक चीख़ मारी जिस्का तात्पर्य यह था कि " मत ठहरो आगे बढ़े आओ। "

यद्यपि सर विल्फ्रेड आगे बढ़े परन्तु साथही दो खाली बन्दूकें हवा पर छोड़ीं, जिस्का परिणाम बहुतही लाभदायक हुआ। अर्थात् वह झुण्ड, जो आगे से आ रहा था, चिल्लाकर अपनी २ मशालों को वहीं पृथ्वी पर पटक इधर उधर भाग गया।

जब यह भागनेवाले उस स्थान पर पहुँचे तो उन्होंने पृथ्वी पर पड़ी एक जलती हुई मशाल उठा ली। सर विल्फ्रेड ने इस्के प्रकाश में एक दृष्टि अपने साथियों पर डाली और सबको अपने साथ पाकर फिर आगे दौड़ना प्रारम्भ किया।

वे जङ्गली मनुष्य जो आगे से आ रहे थे कदाचित् किसी अन्य स्थान के रहे होंगे जिन्हें इन बखेड़ों से कुछ भी काम न था और वे बन्दूक का शब्द मात्र सुनकर इधर उधर भाग गये।

अब बन ऐसा सघन मिला कि उन्हें जङ्गलियों की मशाल नहीं दिखाई देती थी यद्यपि कोलाहल अभी तक सुन पड़ता था। वास्तव में इन लोगों के भाग्य बहुत अच्छे थे कि उपयुक्त राह दिखानेवाला साथही और एक मशाल भी मिल गयी थी नहीं तो वे उस अन्धकार में भटक जाते और एक २ करके उन जङ्ग-लियों के आखेट बनते।

यद्यपि कोई राह दिखाई न पड़ती थी परन्तु वह गुलाम वेखटके मानों किसी जानी बूझे सड़क पर दौड़ा जाता था।

भागनेवालों को यह नहीं मालूम था कि यह टापू इतना लम्बा होगा। जो अनुमान उन लोगों ने उस्की लम्बाई के बारे में किया वह ठीक न निकला, क्योंकि यह लोग एक माइल से भी कहीं ज्यादा दौड़ते हुये आ चुके थे परन्तु अभी किनारा नहीं दिखाई प-ड़ता था। अब राह ऊपर को जाने लगी मानों वह किसी पहाड़ी पर गई है और यह चढ़ाई बड़ीही कठिन थी। अनगिनती प-त्थरों के ढोंके पड़े थे, सहस्त्रों झाड़ियां इधर उधर छिटकी हुई थी। पीछे फिरकर ध्यान देने से इन्हें आनेवालों का कोलाहल भी नहीं सुन पड़ता था। जिस्से इन्हें पुनः साहस हो गया और किसी भांति वह पहाड़ी पर चढ़ गये। बन अब समाप्त हो गया, और उस गुलाम ने खड़े होकर पीछे की ओर इङ्गित किया तो

देखा कि तमाम बन मशालों से प्रकाशमय हो रहा है। कोलाहल न आने का कारण यह था कि वे बुदमा इन्हें चुपचाप धोखा देकर पकड़ा चाहते थे, इनके हांथ की मशाल उन राक्षसों को राह दिखा रही थी। अब वे सब पुनः कोलाहल करने लगे ।

सर विल्फ्रेड—(गुलाम से) हम लोग किनारे से कितनी दूर हैं?

इस प्रश्न के उपरान्त उन्हें यह ध्यान आया कि गुलाम तो हमारी भाषा जानताही नहीं । परन्तु वह इनका इशारा समझ गया और इस्के उत्तर में जो इशारा उसने किया उस्से जान पड़ा कि किनारा बहुत दूर नहीं है। सर विल्फ्रेड ने चिल्ला कर कहा, भागो जल्दी भागो, वे पिशाच बहुत शीघ्र आ रहे हैं हिम्मत न हारो झील का किनारा बहुत निकट है ।

कप्तान जोली, जो बेतरह हाँफ रहे थे, और जिनके मुहँ से साँस, एक छोटे अञ्जन के तुल्य आती जाती थी बोले "मैं नहीं—चल सक्ता मैं थक—गया हूं मुझे—यहीं—छोड़ दो—तुम अपनी रक्षा—करो—हाय मैं क्यों—मैं क्यों मैं ऐसी— खराब जगह—आया—(और इस्के उपरान्त वह फिर हाँफने लगे ।)

सर विल्फ्रेड— यह सब व्यर्थ है, जोली तुम्हें अवश्य दौड़ना होगा, नहीं तो ध्यान रक्खो कि ये राक्षस तुम्हें धीमी आँच पर चुरायेंगे और तुम्हरा हड्डियों का भोजन होगा। हेक्टर और फिलिप तुम दोनों कप्तान की सहायता करो ।

इस बात का भारी असर कप्तान साहब पर पड़ा और सर विल्फ्रेड उनलोगों को बोलता छोड़ कर सबके आगे भागे ।

अब वे लोग पहाड़ी पर से उतर कर मैदान में पहुँचे कि सहसा सर विल्फ्रेड को ठोकर लगी और वे पृथ्वी पर गिर पड़े। मशाल भी इनके साथही गिरी और बुझ गई। अब वह दूसरा प्रकाश कहां से लायें अतः बेचारों को अन्धकारही में दौड़ना पड़ा। इतने में हेक्टर चिल्ला उठा "वह आते हैं" और वास्तव में इनसे कुछही अन्तर पर जङ्गलियों का झुण्ड पहाड़ी पर से उतर रहा था। सर विल्फ्रेड को बड़ाही क्रोध आया और वह कहने लगे "इन पाजियों को अवश्य उचित शिक्षा देनी होगी," और अपने साथियों को लम्बी कतार में बन्दूकें हाथ में लिये बुदमाओं के पहुँचने तक खड़ा कर रक्खा। उन जङ्गलियों ने जब इनकी मशाल बुझी हुई देखी तो क्रोध से चिल्लाने लगे क्योंकि अन्धकार में उन्हें अपने आखेट का पता नहीं चलता था।

जैसेही राक्षसों के आगे की श्रेणी सर विल्फ्रेड से २० गज के अन्तर पर आई वैसेही उन्होंने एक बारगी बन्दूकें सर कीं और उनके ८ मनुष्य भूतलशायी हो गये बहुत सी मशालें बुझ गईं और बड़ा शोर उठा! कुछ काल पर्यन्त बुदमा जिस स्थान पर थे, वहीं खड़े रहे। सर विल्फ्रेड ने यह देखकर कहा, "बस बहुत है अब फिर जल की ओर दौड़ो।" और पुनः यह लोग गुलाम सहित जो आश्चर्य से बन्दूकों का चलना देख रहा था किनारे की ओर भागे। भागने में सबने बड़ीही शीघ्रता की क्योंकि वे जानते थे कि कुछही देर के उपरान्त उनके जीवन का

वारा न्यारा होनेवाला है। कप्तान जोली तो अधमुये से हो गये थे जिन्हें हेक्टर तथा फिलिप घसीटे लिये जाते थे। चेको जो सब से तेज़ था सर विल्फ्रेड के साथही साथ दौड़ रहा था। यहां पर वृक्ष बहुत कम थे, और भूमि के चौरस होने के कारण उन्हें ठोकर न लगती थी। इनके पीछे कुछ गजों के अन्तर पर बुदमाओं के झुण्ड के झुण्ड झपटे चले आते थे। अब उनका हुल्लड़ नहीं जान पड़ता था केवल मशालों की रोशनी और हथियारों की खड़खड़ाहट जान पड़ती थी।

इतने में वह गुलाम ज़ोर से चिल्ला उठा और फिर चुप हो गया। सर विल्फ्रेड इस्का कारण जानने के निमित्त उस्की ओर झपटे पर जैसेही वह चार कदम चले थे कि एक ६ फीट के नीचे, स्थान में गिर पड़े। यहां किनारा ढालुआँ था जिस्से उन्हें कोई चोट न आई वे तुरन्त उठ बैठे और उस स्थान से सबको सचेत कर दिया। सब ठहर गये और एक २ करके उस ढालुयें स्थान से खिसकते हुये उनके निकट जा पहुँचे। अब भूमि बलुई मिलने लगी। इनके ठीक सामने कुछही दूरी पर शेड झील लहरें मार रही थी। गुलाम पानी के किनारे खड़ा था और सर विल्फ्रेड कुछही देर में अपने साथियों सहित उस्के पास पहुँच गये। आह! यह कैसे आनन्द का स्थान था कि जब वे लोग प्राणबचानेवाले दो बड़े २ डोगों के निकट खड़े थे! इस समय इनके पीछे तो इनके पकड़नेवाले आ रहे थे और इनके आगे झील, जिस्में इनके छुटकारे की राहें बनी दिखाई

देती थीं। यद्यपि डेंगे घास और सर्कण्डों द्वारा छिपे हुये थे परन्तु गुलाम को पहलेही से मालूम था और वह बलिष्ट व्यक्ति उसे एक धक्के में साफ और गहरे जल पर ले आया। एक नाव पर कप्तान जोली और वह गुलाम बैठे, तथा दूसरी पर औरों ने अधिकार जमाया। डेंगियों में डाँड़े रक्खे हुये थे, और ठीक उस समय जब बुदमा किनारे पर पहुँचे, उनकी नावें तीर के समान किनारे को छोड़कर झील के बीच में जा रहीं थीं।

पन्द्रहवाँ बयान।

जङ्गालियों ने जब अपना उद्योग व्यर्थ होते देखा तो उन्होंने कुछ बर्छे, पत्थर, और तीर उन भागनेवालों की ओर फेके, परन्तु निरर्थक! वह डेंगिया बड़ी शीघ्रता से जल को काटती आगे बढ़ी चली जाती थीं।

हेक्टर—भई! इतनी चोट चपेट के उपरान्त भी हम कैसे अपने भुजाओं को काम में ला रहे हैं। इस्के पहले मुझे कभी इतना दौड़ने का अवसर नहीं पड़ा था।

सर विल्फ्रेड—अभी क्या है? तुम्हारा बाहुबल आगे चल के देखा जायगा अभी तो यहां से श्रीगणेशही है।

यह कहकर वह नाव की तलाशी लेने लगे, उन्होने देखा कि आठ फीट लम्बी तथा पाँच फीट चौड़ी एक चटाई उसमें बिछी हुई थी। इसे उन्हो ने उठाया तो इस्के नीचे बारह फीट लम्बा तथा ताँबे की मुंदरी में जड़ा बाँस दिखाई पड़ा जिसे देखतेही

वह बोल उठे "तो भई । पाल के सामान भी मिल गये यह इस्का डराडा है और यह इधर पाल भी रक्खी हुई है। समय पर यह बड़ाही काम देगा।

हेक्टर—क्यों महाशय अन्त हम जाते कहां हैं? क्या बुदमा हमारा पीछा नहीं करेंगे उनके पास भी तो बहुत से डोंगे हैं।

सर विल्फ्रेड—मुझे भय है कि वे अवश्य पीछा करेंगे। परन्तु हम उनसे बहुत आगे हैं और ठीक शेरी नदी की ओर जा रहे हैं । यह नदी पूर्व दिशा की ओर है। यह शेड झील १०० माइल के लगभग लम्बी है इस हिसाब से हम अस्सी या नब्बे माइल के अन्तर पर नदी शेरी से हैं।

कप्तान जोली—परन्तु खाना पीना तो ईश्वर का नाम है, एक टुकड़ा रोटी का ढूँढ़िये तो न मिलेगा! तो क्यों महाशय सर विल्फ्रेड साहब! क्या हम लोगों को भूखों मरना होगा?

सर विल्फ्रेड—नहीं जी भूखों क्यों मरने लगे; आज प्रातःकाल हम लोग बहुत अच्छी तरह भोजन कर चुके हैं जो एक वा दो दिन के निमित्त बहुत होगा। परन्तु हम अपना समय व्यर्थ की बकवाद में क्यों नष्ट कर रहे हैं। मेरी इच्छा है कि सब कोई एकही डोंगे में आ जावें, एक तो यह बहुत लम्बी है और दूसरे एक पाल दो नाव के लिये नहीं पूरी पड़ सक्ती। इस लिये एक नाव में सबके आजाने से निश्चिन्ततापूर्वक हमलोग आगे बढ़ेंगे।

सर विल्फ्रेड का ध्यान बहुतही ठीक था और सब ने इनकी राय मानी। वह दूसरा डोंगा झील पर उलटा करके छोड़ दिया गया। जहाँ लों दृष्टि जाती थी कोई प्रकाश झील के इधर नहीं दिखलाई पड़ता था। और ये लोग बारी २ नाव चलाते बढ़े जाते थे। पहले सर विल्फ्रेड, कप्तान जोली, और फिलिप; और फिर हेक्टर और दोनों गुलाम खेते थे।

इस अदला बदली से नाव तीर के समान जा रही थी और वह लम्बी तथा पतली नाव बनाई भी ऐसेही समय के लिये गई थी; पानी इस्से बड़ीही आसानी से कटता था। अब रात आधी से भी ज्यादा जा चुकी थी और सर विल्फ्रेड बैठे, अपने साथियों का साहस बढ़ा रहे थे उनको दृढ़ आशा थी कि वह पाल के चढ़ाने पर शेरी तक चौबीस घण्टे में जा पहुँचेंगे। इतने में कप्तान जोली ने इधर उधर देखकर टाँगे फैलाईं और कुछही देर के बाद खर्राटे लेने लगे। यह देखकर चेको से भी न रहा गया और उसने भी कुछही देर के उपरान्त उनका साथ दिया। दूसरे लोगों ने अपनी इस इच्छा को रोका और दम ले लेकर परिश्रम करने लगे।

सर विल्फ्रेड किसी बड़ेही गम्भीर विषय पर ध्यान कर रहे थे आपस में किसी प्रकार की बात चीत न होती थी। वह केवल एक दफे बोले और वह बात शाह काशांङ्गो के बारे में थी वह उस्का धन्यवाद और उस्के प्रण के दृढ़ता की बड़ी प्रशंसा करते थे। उसने अपने लड़के की जान बचानेवालों को

अपना एक भण्डार ; अर्थात् गुलाम, बन्दूक, और बारूद कृपा करके दे दी थी।

सर विल्फ्रेड—यद्यपि यह बादशाह इन्हीं असभ्य निर्दयी और भयानक जाति में से है परन्तु वह सभ्य जातिओं के बहुत से लोगों से अच्छा है। यह पृथ्वी भी क्या विचित्र वस्तु है।

फिर इस्के उपरान्त कोई बात चीत आपस में न हुई यहाँ लों कि प्रातःकाल हो गया। आह ! वह कैसा समय था कि जब अफ्रिका का जलता बलता सूर्य निकलतेही उनकी खोपड़ियों को चिटकाने लगा, पानी अदहन हो गया परन्तु इस समय इनकी सहायता भूख ने की। अर्थात् वे भूखे रहने के कारण विशेष परिश्रम करते थे क्योंकि उन्हें यह भली भाँति मालूम हो गया था कि बिना किसी जगह उतरे भोजन का ठिकाना लगना कठिन है। भाग्यवश झील का पानी मीठा था इसलिये उन्हें प्यास का कष्ट नहीं उठाना पड़ता था।

सूर्य के निकलतेही धीरे २ कुहरा फटने लगा और उनके चारो ओर का दृश्य जो अब तक नेत्रों से छिपा था क्रमशः साफ दिखाई देने लगा। कि इतने में सर विल्फ्रेड की दृष्टि पश्चिम ओर गई और उन्हें ६ डोंगे अपनी ओर शीघ्रता से आते दिखलाई दिये, इसे देखतेही उन्होंने जोर से कहा "वह आ रहे हैं; सब कोई डाँड़े अपने हाथों में लेलो कोई खाली न रहे" यह कहकर वे स्वयं परिश्रम और शीघ्रता से डाँड़े चलाने लगे।